INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.428 (SJIF 2026)

प्रतापगढ़ जनपद के सरकारी एवं गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि और समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन

(Comparative study of emotional intelligence and adjustment ability of government and non-government higher secondary school students of Pratapgarh District)

सुरेश चन्द्र जायसवाल
शोधार्थी,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय,
सांई नाथ विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड, भारत)

डॉ. बेबी कुमारी
शोध निर्देशिका, प्राध्यापिका,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय,
सांई नाथ विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड, भारत)

DOI No. 03.2021-11278686 DOI Link :: https://doi-ds.org/doilink/01.2026-67436237/IRJHIS2601021

सारांश :

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य प्रतापगढ़ जनपद के सरकारी एवं गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि और समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना था। यह अध्ययन वर्णनात्मक शोध पद्धति के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि के माध्यम से किया गया। अधिकांशतः उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र–छात्राएं किशोरावस्था में होते हैं। किशोरावस्था विद्यार्थियों के भविष्य निर्माण के लिए अत्यंत ही महत्वपूर्ण एवं परिवर्तनकारी अवस्था है, जो उन्हें अपेक्षित भविष्य एवं व्यवसाय के लिए तैयार करती है।

***मुख्य शब्द** : संवेगात्मक बुद्धि, समायोजन क्षमता*

प्रस्तावना :

आज के इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में केवल बौद्धिक क्षमताएँ (IQ) ही नहीं, बल्कि संवेगात्मक बुद्धि (EQ) भी व्यक्ति की सफलता का एक महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व बन चुकी है। संवेगात्मक बुद्धि वह मानसिक क्षमता है, जिसके माध्यम से व्यक्ति स्वयं को एवं दुसरों की भावनाओं को समझने, उन्हें नियंत्रित करने तथा उपयुक्त रूप से अभिव्यक्त करने में सक्षम होता है। व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में सफलता के साथ ही साथ विद्यार्थियों की शैक्षिक यात्रा में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। संवेगात्मक बुद्धि में समाहित आत्मजागरुकता, आत्मनियंत्रण, सहानुभूति, सामाजिक कौशल एवं प्रेरणा जैसे घटक विद्यार्थियों के व्यवहार, मानसिक स्थिति, निर्णय क्षमता तथा सम्प्रेषणशैली को प्रभावित करते हैं, जो उन्हें किसी भी परिवार के साथ, विद्यार्थियों के साथ एवं सामाज के साथ समायोजन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पूर्व में किये गए शोध अध्ययनों से यह प्रमाणित होता है कि जिन विद्यार्थियों का संवेगात्मक बुद्धि उच्च होता है, वे न केवल भावनात्मक रूप से अधिक संतुलित रहते हैं, बल्कि वे

अपने आपको किसी भी परिस्थिति में समायोजन कर के बड़ी से बड़ी सफलता अर्जित करते हैं।

संवेगात्मक बुद्धि –

संवेग शब्द अंग्रेजी के 'इमोशन' शब्द का हिंदी रूपान्तर है। इस शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के ' इमोवेएर' शब्द से मानी जाती है, जो उत्तेजित करने, हलचल मचाने, उथल–पुथल या क्रान्ति करने जैसे अर्थों में प्रयुक्त होता है।

संवेगात्मक बुद्धि से आशय संवेगों से सही ढंग से निपटने की संज्ञानात्मक क्षमता से होता है। इसमें व्यक्ति के अपने संवेगों तथा दुसरों के संवेगों को जानने, समझने तथा प्रबंधन करने की संपूर्ण योग्यता समाहित होती है। दुसरे शब्दों में, संवेगात्मक बुद्धि संवेगों को उचित दिशा देने, उनको अपनी विचार प्रक्रिया में शामिल करने तथा लक्ष्यों की प्राप्ति व समायोजन करने में उनका उपयोग करने की क्षमता है।

क्रो & क्रो के अनुसार – "संवेग गतिशील आतंरिक समायोजन है, जो की संतोष, सुरक्षा और कल्याण के लिए कार्य करती है।"

वुडवर्थ के अनुसार –" संवेग व्यक्ति की उत्तेजित दशा है।"

जीवन को सुव्यवस्थित करने के लिए व्यावसायिक अर्थात् सांवेगिक बुद्धि आवश्यक है, जैसे कि गीता में भगवान् श्री कृष्ण कहते हैं कि– वह बुद्धि जो हमेशा यत्न के लिए अभिप्रेरित करती है, व्यावसायिक बुद्धि कहलाती है। पाश्चात्य देशों के शिक्षाविद इसका विशेष महत्व व्यवसाय के रूप में अंगीकार करते हैं, जिसका नाम उन्होंने सांवेगिक बुद्धि दिया। वस्तुतः सांवेगिक का प्रकटीकरण तो बहुत सरल है, परन्तु यथा काल, यथा स्थल, यथा व्यक्ति आदि के समक्ष प्रकटीकरण एवं क्रियान्वयन दोनों कठिन होता है। अर्थात संवेग का सुप्रबंधन ही सांवेगिक बुद्धि है।

सांवेगिक बुद्धि शब्द का प्रथम प्रयोग सन् 1990 ई. के बोस्टन विश्वविद्यालय के दो प्रोफेसरों–प्रो. जॉन मेयर तथा प्रो. पीटर सेलोवे ने किया था। उन्होंने सांवेगिक बुद्धि को निम्लिखित रूप में परिभाषित किया है –

"सांवेगिक बुद्धि एक ऐसी क्षमता है, जिससे संवेगों को कार्य रूपों में प्रबंधन तथा नियंत्रण में सहायता मिलती है।"

वस्तुतः प्राचीन अवधारणा है कि व्यक्तियों की सफलता में मानसिक योग्यता का भी प्रमुख स्थान माना जाता है परन्तु नवीन शोध कार्यों से यह अवधारणा प्रायशः समाप्त हो गयी।

डेनियल गोलमैन के अनुसार –"मानव की सफलता में 80 प्रतिशत योगदान सांवेगिक बुद्धि तथा केवल 20 प्रतिशत मानसिक योग्यता का होता है।"

अतः सांवेगिक बुद्धि का परीक्षण तथा विकास के उपायों की वर्तमान काल में शिक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है।

समायोजन क्षमता –

'समायोजन' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है – 'सम' (अर्थात् भली–भाँति, अच्छी तरह या समान रूप से) और 'आयोजन' (अर्थात् व्यवस्था)। इस प्रकार, समायोजन का अर्थ है परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को व्यवस्थित करने की प्रक्रिया, जिससे व्यक्ति की आवश्यकताएँ पूरी हों और मानसिक द्वंद्व उत्पन्न न हो।

मनुष्य की अनेक आवश्यकताएँ होती हैं, जो उसे अपने लक्ष्यों की ओर प्रेरित करती हैं। जब लक्ष्य की

प्राप्ति सरलता से हो जाती है, तो व्यक्ति को संतोष होता है, किन्तु जब बाधाओं का सामना करना पड़ता है, तो उसे कुण्ठा, असंतोष, हताशा, या निराशा होती है। जब इच्छाओं के विरुद्ध परिस्थितियाँ बनती हैं, तो मानसिक द्वंद्व उत्पन्न होता है, जिससे तनाव बढ़ता है। यदि व्यक्ति रचनात्मक तरीके से समस्याओं का समाधान कर लेता है, तो वह अपने वातावरण के साथ समायोजन कर लेता है। लेकिन यदि वह अवांछनीय मार्ग अपना लेता है, तो कुसमायोजन उत्पन्न हो जाता है।

गेट्स के अनुसार –"समायोजन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने वातावरण के बीच संतुलित सम्बन्ध बनाये रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता ह।"

बोरिंग, लॉगफील्ड व वेल्ड के अनुसार –"समायोजन वह प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अपनी आवश्यताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन रखता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के अवलोकन से स्पष्ट है कि व्यक्ति को सफल जीवन व्यतीत करने के लिए अपने वातावरण और परिस्थितियों के साथ समायोजन स्थापित करना आवश्यक हो जाता है। व्यक्ति के जीवन में अनेक प्रकार की अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियाँ आती रहती है, जिनका उसे सामना करना पड़ता है। कुछ लोग प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने में सफल होते हैं और कुछ लोग हार मानकर अपना मानसिक संतुलन खो बैठते हैं। डार्विन का कहना है कि व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए लगातार संघर्ष करता रहता है, जो व्यक्ति जितना अधिक संघर्ष करता है, वह अपने जीवन में उतनी अच्छी तरह समायोजित होता है।

समायोजन की आवश्यकता –

छात्र के सर्वांगीण विकास के लिए समायोजन अत्यंत आवश्यक है। इसकी आवश्यकता निम्नलिखित बिंदुओं में स्पष्ट की जा सकती है:

- मानसिक कष्ट और व्याधियों से बचने के लिए
- अनावश्यक चिंतन से मुक्ति पाने हेतु
- कक्षा में ध्यान की एकाग्रता बनाए रखने के लिए
- विद्यालय की गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए
- नकारात्मक प्रवृत्तियों (जैसे पलायन, चुनौती देना) से बचाव हेतु
- सामाजिक स्वीकृति और भ्रातृत्व प्राप्त करने के लिए
- जीवन्त शौक विकसित करने हेतु
- कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने के लिए
- जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अधिकतम सफलता प्राप्त करने हेतु

समायोजन के क्षेत्र –

- स्वास्थ्य समायोजन
- भावनात्मक समायोजन
- सामाजिक समायोजन
- पारिवारिक समायोजन

- व्यावसायिक समायोजन
- विद्यालय समायोजन

समायोजन को प्रभावित करने वाले कारक –बालक के समायोजन पर विभिन्न मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक और शारीरिक कारक गहरा प्रभाव डालते हैं। ये कारक बालक की पर्यावरण, समाज और स्वयं के साथ तालमेल बनाने की क्षमता को मजबूत या कमजोर कर सकते हैं। निम्नलिखित प्रमुख कारकों पर विचार किया जा सकता है:

- मानसिक स्वास्थ्य
- भावनात्मक कुंठा
- मानसिक द्वंद्व
- मानसिक तनाव
- अपमानजनक अनुभव
- स्नायु विकार
- शारीरिक अस्वस्थता या अक्षमता

समायोजन के प्रकार – समायोजन मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं–

1–सुसमायोजन 2– कुसमायोजन

1. **सुसमायोजन** – जब कोई बालक अपनी क्षमताओं, योग्यताओं और पर्यावरण के बीच संतुलन स्थापित कर लेता है, तो वह सुसमायोजन कहलाता है। ऐसे बालक अपनी योग्यताओं के अनुसार आवश्यकताएँ, इच्छाएँ और लक्ष्य निर्धारित करते हैं और उन्हें प्राप्त करने में सफल रहते हैं। यदि कोई बाधा आती है, तो वे साहस और समझदारी से उसका सामना करते हैं।

समायोजित व्यक्ति के लक्षण :

समायोजन के उपरोक्त विवरण के आधार पर तथा व्यवहारों के निरीक्षण से समायोजित व्यक्ति में निम्नलिखित लक्षण दिखाई पड़ते हैं–

- सुसमायोजित व्यक्ति पर्यावरण और परिस्थितियों का ज्ञान और नियन्त्रण रखने वाला तथा उन्हीं के अनुकूल आचरण करने वाला होता है।
- वह स्वयं तथा पर्यावरण के बीच संतुलन बनाये रखता है।
- यह अपनी आवश्यकता एवं इच्छा के अनुसार पर्यावरण एवं वस्तुओं का लाभ उठाता है।
- अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए समाज के अन्य लोगों को कष्ट नहीं पहुँचाता है।
- साधारण परिस्थितियों में भी संतुष्ट और सुखी रहकर अपनी कार्य–कुशलता को बनाये रखता है।
- सामाजिकता की भावना से युक्त, आदर्श चरित्र वाला, संवेगात्मक रूप से संतुलित और उत्तरदायित्व स्वीकार करने वाला होता है।

2. **कुसमायोजन** – जब बालक अपनी आवश्यकताओं, आकांक्षाओं और परिस्थितियों के बीच सामंजस्य स्थापित

करने में असफल रहता है, तो वह कुसमायोजन कहलाता है। ऐसी स्थिति में बालक मानसिक तनाव, कुंठा और असामान्य व्यवहार जैसे दादागिरी या समाजविरुद्ध क्रियाएँ दिखाने लगता है।

कुसमायोजित व्यक्ति के लक्षण :

1. पर्यावरण के अनुकूल न हो पाना
2. अनिश्चितता, अस्थिरता और भावनात्मक असंतुलन
3. असामाजिक और आत्मकेंद्रित व्यवहार
4. छोटी समस्याओं पर मानसिक संतुलन खो देना
5. मानसिक द्वंद्व, कुंठा और स्नायु संबंधी समस्याओं से ग्रस्त होना

कुसमायोजन के कारणः

1. प्राकृतिक वातावरण – अत्यधिक गर्मी, सर्दी या नमी जैसी स्थितियाँ रोग उत्पन्न कर मानसिक तनाव उत्पन्न करती हैं।

2. भौतिक वातावरण – विद्यालय में सुविधाओं की कमी–जैसे खराब भवन, पानी, शौचालय, फर्नीचर, चाक–श्यामपट्ट आदिकृभी विद्यार्थी के समायोजन में बाधक बनते हैं।

3. सामाजिक वातावरण :

- पारिवारिक वातावरण– माता–पिता से अच्छे संबंधों की कमी, अत्यधिक अपेक्षाएँ, परिवार में कलह, बेरोजगारी आदि।
- सामुदायिक वातावरण– समुदाय में असमानता, पूर्वाग्रह, कठोरता और धार्मिक संघर्ष।

4. विद्यालयीन वातावरण–

- शिक्षक से जुड़ी समस्याएँ – अभद्र व्यवहार, पक्षपात, समस्याओं की अनदेखी
- पाठ्यक्रम संबंधी समस्याएँ – अत्यधिक कठिन या सरल पाठ्यक्रम
- साथियों से जुड़ी समस्याएँ – उपेक्षा, तुलना, असमानता
- व्यक्तिगत कारण – शारीरिक दोष, हीन भावना, अवास्तविक इच्छाएँ

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि समायोजन एक गतिशील प्रक्रिया है। एक व्यक्ति की प्रगतिशीलता का सूचक है। प्रत्येक विद्यार्थी का वर्तमान में भविष्य का जीवन तभी सुखमय व आनन्दमय हो सकता है, जब उसका व्यवहार समायोजित करने वाला होता है।

समस्या कथन –

"प्रतापगढ़ जनपद के सरकारी एवं गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि और समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन"

शोध का औचित्य :

प्रस्तुत शोध में सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों को आधार बनाकर संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन जैसे मनोवैज्ञानिक पहलुओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। यह शोध, विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों एवं शोधार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

शोध के उद्देश्य –

1. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध के परिकल्पना –

1. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. सरकारी एवं गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन विधि :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है जो वर्णनात्मक शोध पर आधारित है।

जनसंख्या : प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जनपद में स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के सत्र 2023–24 में अध्यनरत कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों को शोध कार्य की जनसंख्या माना गया है,जो यू०पी० बोर्ड इलाहाबाद से मान्यता प्राप्त है।

न्यादर्श : प्रस्तुत अध्ययन में नया आदर्श के रूप में प्रतापगढ़ जनपद के उच्चतर माध्यमिक
विद्यालय के यू०पी० बोर्ड के कक्षा 11 के कुल 500 विद्यार्थियों को शामिल किया गया। शोधार्थी द्वारा यादृच्छिक न्यादर्श की लॉटरी विधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया गया।

शोध उपकरण –

1–संवेगात्मक बुध्दि मापनी–डॉ. अरुण कुमार सिंह और डॉ. श्रुति नारायण द्वारा निर्मित ।

2– समायोजन मापनी– डॉ.ए.के.पी सिन्हा एवं डॉ.आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित ।

सांख्यिकी पद्धति – प्रस्तुत शोध अध्ययन में एकत्रित आंकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन एवं टी परीक्षण का प्रयोग किया गया।

विश्लेषण एवं व्याख्या :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निर्धारित प्रत्येक उद्देश्य के अनुरूप पर एकत्रित किए गए आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त परिणामों की व्याख्या का विवरण निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत किया गया है–

प्रस्तुत शोध अध्ययन का प्रथम उद्देश्य ″सरकारी एवं गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना″ था। अध्ययन के प्रथम उद्देश्य के अनुसार आंकड़ों पर सांख्यिकी विश्लेषण एवं व्याख्या किया गया जिसकी प्राप्ति के लिए शून्य परिकल्पना ″सरकारी एवं गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।″ का मध्यमान ,प्रमाणिक विचलन एवं टी–मान द्वारा सार्थकता के स्तर का निर्धारण किया गया जिसे तालिका संख्या 1 में प्रदर्शित किया गया है–

तालिका संख्या – 1

सरकारी विद्यालय तथा गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि से संबंधित विश्लेषण तालिका का तुलनात्मक विवरण

विद्यालय	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी.मान	सार्थकता के स्तर	परिणाम
सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	250	20.216	2.763	0.775	0.05 Df(498)1.96	असार्थक
गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	250	20.016	3.006			

दण्ड आरेख संख्या–1

सरकारी विद्यालय तथा गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमानों एवं मानक विचलन की तुलना

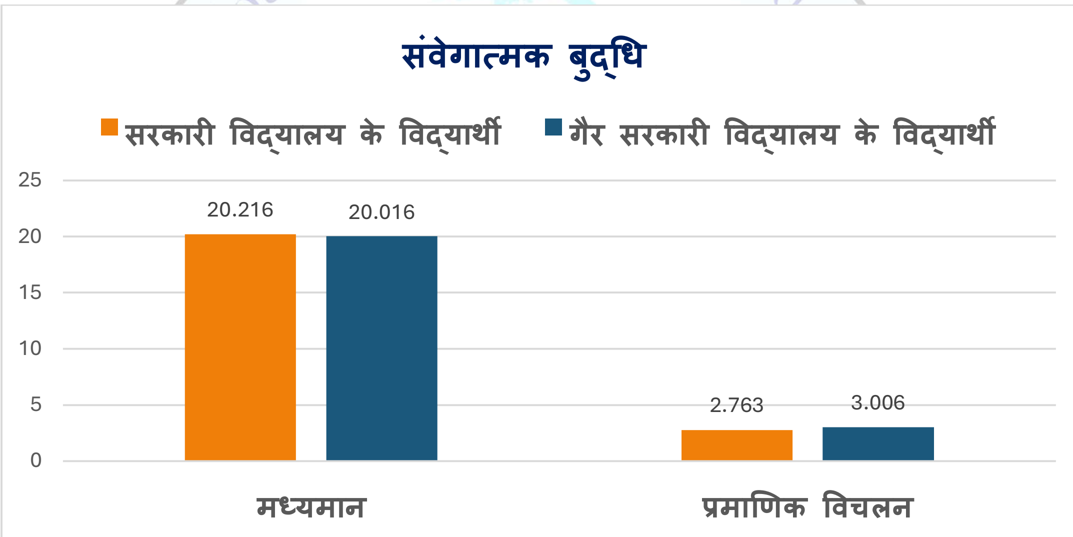

उपर्युक्त तालिका संख्या के अनुसार सरकारी विद्यालय तथा गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का संवेगात्मक बुद्धि मापनी पर प्रदत्तों का कुल मध्यमान क्रमशरू 20.216 व 20.016 तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 2. 763 व 3.006 प्राप्त हुआ है। जो यह प्रदर्शित करता है कि सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों से अधिक है। सरकारी विद्यालय तथा गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के मध्यमानों में अंतर का टी–मान 0.775 प्राप्त हुआ है। जो मुक्तांश (Df) 498 के 0.05 सार्थकता स्तर पर दिये गये सारणी मूल्य 1.96 से कम है। इससे यह ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यालय तथा गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना संख्या 01 सरकारी एवं गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" को स्वीकृत की जाती है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का द्वितीय उद्देश्य "सरकारी एवं गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना" था। अध्ययन के द्वितीय उद्देश्य के अनुसार आंकड़ों पर सांख्यिकी विश्लेषण एवं व्याख्या किया गया जिसकी प्राप्ति के लिए शून्य परिकल्पना "सरकारी एवं गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" का मध्यमान ,प्रमाणिक विचलन एवं टी–मान द्वारा सार्थकता के स्तर का निर्धारण किया गया जिसे तालिका संख्या –2 में प्रदर्शित किया गया है–

तालिका संख्या– 2

सरकारी विद्यालय तथा गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता से संबंधित विश्लेषण तालिका का तुलनात्मक विवरण

विद्यालय	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी-मान	सार्थकता के स्तर	परिणाम
सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	250	19.828	3.596	1.886	0.05 Df(498)1.96	असार्थक
गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	250	20.596	5.426			

दण्ड आरेख संख्या–2

सरकारी विद्यालय तथा गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता के मध्यमानों एवं मानक विचलन की तुलना

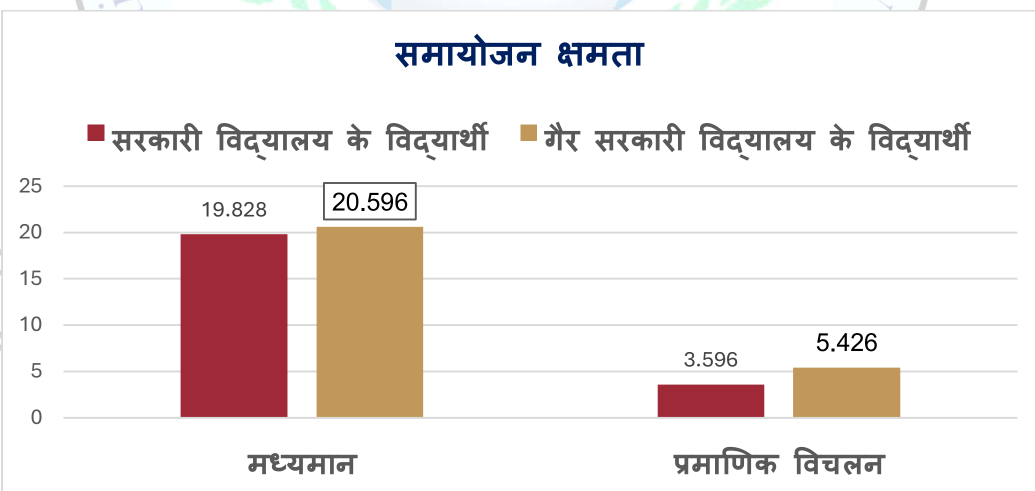

उपर्युक्त तालिका संख्या के अनुसार सरकारी विद्यालय तथा गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का समायोजन क्षमता मापनी पर प्रदत्तों का कुल मध्यमान क्रमशः 19.828 व 20.596 तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 3.596 व 5.426 प्राप्त हुआ है। जो यह प्रदर्शित करता है कि सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों से कम है। सरकारी विद्यालय तथा गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के

मध्यमानों में अंतर का टी–मान 1.866 प्राप्त हुआ है। जो मुक्तांश (Df) 498 के 0.05 सार्थकता स्तर पर दिये गये सारणी मूल्य 1.96 से कम है। इससे यह ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यालय तथा गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना संख्या 02 सरकारी एवं गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" को स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :

आंकड़ों के विशेषण के आधार पर निष्कर्ष में पाया गया कि सरकारी एवं गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अध्ययन के आँकड़ों के विश्लेषण से यह तथ्य सामने आया कि संवेगात्मक बुद्धि, जो संवेगों की समझ, अभिप्रेरणा की समझ, समानुभूति तथा संबंध संभालना जैसे घटकों से मिलकर बनती है,विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है। अतः विद्यालय स्तर पर ऐसे अधिगम अनुभवों को प्रोत्साहित करना चाहिए जो विद्यार्थियों के भावनात्मक बोध एवं संवेग नियंत्रण को सशक्त बनाएं–जैसे सामूहिक गतिविधियाँ, सामुदायिक कार्यक्रम, रचनात्मक क्रियाएँ, परामर्श, ध्यान, योग एवं पाठ्य सहगामी गतिविधियाँ। यदि इस दिशा में विस्तृत अनुसंधान किया जाए तो संवेगात्मक बुद्धि से जुड़ी इकाइयों को विद्यालयी पाठ्यचर्या में भी शामिल किया जा सकता है।

शोध अध्ययन के दूसरे निष्कर्ष से यह स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का समायोजन स्तर अपेक्षाकृत बेहतर पाया गया। अतः सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन को सुदृढ़ करने के लिए प्रभावी कदम उठाए जाने चाहिए। विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शन तथा परामर्श की पर्याप्त सुविधाएँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए, ताकि वे असहज परिस्थितियों के कारणों को समझकर उनके समाधान हेतु उचित प्रशिक्षण प्राप्त कर सकें।

सुझाव :

- विद्यालयों में सकारात्मक सोच के साथ ही बेहतर वातावरण को बढ़ावा दिया जा सकता है, जो विद्यार्थियों के समायोजन में सहायक सिद्ध हो सकता है।
- शिक्षकों को विद्यार्थियों के संवेगों एवं भावनाओं के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार अपनाना चाहिए ताकि वह उन्हें बेहतर समझ सकें और तथा अवांछनीय संवेगों का मार्गंतीकारण कर उनको सही जगह उपयोग कर सके।
- शिक्षकों को छात्रों के बीच बेहतर समायोजन क्षमता अथवा कौशल की सुविधा के उपायों को बढ़ाने के लिए कार्यक्रमों को प्रोत्साहन देना चाहिए।
- विद्यालय में विभिन्न अधिगम–अनुभव के द्वारा विद्यार्थियों के संवेगिक बुद्धि का विकास करने का प्रयास किया जा सकता है और सामाजिक बुद्धि से संबंधित क्रियाकलापों को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रम में स्थान दिया जा सकता है।

यदि विद्यार्थी संवेगात्मक रूप से मजबूत होगा तो वह न केवल शैक्षिक जगत में बल्कि अपने जीवन में कहीं भी किसी भी क्षेत्र व परस्थिति में स्वयं को बेहतर तरीके से समायोजित कर बड़ी से बड़ी सफलता प्राप्त कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. गुप्ता, एस० पी० एवं गुप्ता, अल्का (2023). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।

2. मंगल, एस०के० (2013). शिक्षा मनोविज्ञान. दिल्लीः पी एच आई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।

3. राय, पी० एन० (2007). अनुसंधान परिचय. आगरारू लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।

4. रायजादा, डॉ० बी० एस० एवं वर्मा, डॉ० वंदना (2013). शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व.जयपुर : राजस्थान हिंदी प्रकाशन ग्रंथ अकादमी।

5. शर्मा, डॉ० आर० ए० एवं चतुर्वेदी, डॉ० शिखा (2013). शिक्षा मनोविज्ञान के मूल तत्व. मेरठः विनय रखेजा आर० लाल बुक डिपो।

6. शर्मा, डॉ० आर० ए० (2010). शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया. मेरठः आर० लाल बुक डिपो।

7. सिंह, डॉ ० अरुण कुमार (2013). शिक्षा मनोविज्ञान. पटनारू भारती भवन।

8. सिंह, डॉ० अरुण कुमार (2015). मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां. पटनाः मोती लाल बनारसी दास।

9. सारस्वत, डॉ० मालती (2020). शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा. इलाहाबादः आलोक प्रकाशन।